Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024

UGC CARE I

शाहजहां कालीन स्थापत्य कला: मुग़ल युग की स्थापत्य परंपरा की चरम अभिव्यक्ति

डॉ. लक्ष्मी देवी सैनी

प्रवक्ता - इतिहास

पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय मॉडल इंटर कॉलेज सेमरा

आगरा (उत्तर प्रदेश)

संक्षेप

शाहजहां कालीन स्थापत्य कला मुग़ल वास्तुकला की चरम उपलब्धि मानी जाती है, जिसमें सौंदर्य, समरसता और भव्यता का अद्भुत संगम देखा जाता है। इस युग की सबसे प्रमुख विशेषता सफेद संगमरमर का सुंदर प्रयोग, सूक्ष्म नक्काशी, सममिति, चारबाग़ शैली और इस्लामी-भारतीय तत्वों का समन्वय है। ताजमहल, लाल किला, जामा मस्जिद, दीवाने-आम, मोती मस्जिद आदि स्मारक इस युग की उत्कृष्ट कलात्मक दृष्टि के प्रतीक हैं। स्थापत्य के माध्यम से शाहजहां ने न केवल शक्ति और वैभव को प्रदर्शित किया, बल्कि स्थापत्य को आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनाया। धार्मिक सहिष्णुता, शुद्ध सौंदर्यबोध और कलाप्रियता ने इस युग की स्थापत्य शैली को सार्वकालिक और वैश्विक महत्व प्रदान किया। संक्षेप में, शाहजहां कालीन स्थापत्य कला भारतीय इतिहास की एक अमूल्य धरोहर है, जो न केवल शिल्प की दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी अद्वितीय स्थान रखती है।

संगमरमर.चारबाग़ शैली, सममिति, ताजमहल, मुग़ल स्थापत्य

प्रस्तावना

मुग़ल साम्राज्य का स्थापत्य विकास अपने चरमोत्कर्ष पर शाहजहां के शासनकाल (1628-1658 ई.) में पहुँचा, जिसे भारतीय इस्लामी वास्तुकला का स्वर्णयुग कहा जाता है। शाहजहां का शासन न केवल राजनीतिक स्थिरता और समृद्धि का युग था, बल्कि कला, संस्कृति और स्थापत्य में अप्रतिम उन्नति का भी काल रहा। इस युग की स्थापत्य कला में अद्वितीय भव्यता, संगमरमर का अनुपम प्रयोग, सूक्ष्म नक्काशी, अनुपात एवं सममिति की परिपूर्णता देखने को मिलती है। शाहजहां की कलाप्रियता, सौंदर्यबोध और धार्मिक सहिष्णुता ने स्थापत्य को एक नए सौंदर्यात्मक और आध्यात्मिक आयाम प्रदान किया। इस काल की प्रमुख संरचनाओं में ताजमहल, लाल किला (दिल्ली), जामा मस्जिद, दीवाने-आम और दीवाने-ख़ास, मोती मस्जिद (आगरा) तथा शालीमार बाग़ (लाहौर) शामिल हैं, जो आज भी स्थापत्य शास्त्र की उच्चतम उपलब्धियों के रूप में देखे जाते हैं। ताजमहल, जो प्रेम और शोक की अमर अभिव्यक्ति है, विश्व भर में मुग़ल वास्तुकला की पहचान बन चुका है। शाहजहांकालीन स्थापत्य की विशेषताएँ न केवल उसकी भव्यता में हैं, बल्कि उसमें निहित समरसता, कलात्मक संतुलन और सांस्कृतिक

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024
UGC CARE I

समन्वय में भी दृष्टिगोचर होती हैं। फ़ारसी, तुर्की, मध्य एशियाई एवं भारतीय वास्तु परंपराओं का समन्वय इस काल को विशिष्ट बनाता है। इसके अतिरिक्त, जल संरचनाएँ, बाग़ शैली (चारबाग़), मेहराब, गुम्बद, मीनारें तथा जालियों की सुघड़ रचना स्थापत्य की तकनीकी दक्षता का प्रमाण हैं। शाहजहां काल की स्थापत्य कला केवल भौतिक संरचनाएँ नहीं, बल्कि उस युग के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति हैं। स्थापत्य के माध्यम से शक्ति, सौंदर्य और आध्यात्मिकता का अद्वितीय संगम प्रस्तुत हुआ, जिसने भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। इस प्रकार शाहजहां कालीन स्थापत्य न केवल कला का प्रतीक है, बल्कि एक सांस्कृतिक दर्पण भी है, जो उस युग की महानता को आज भी प्रतिबिंबित करता है।[1]

अध्ययन का उद्देश्य

शाहजहां कालीन स्थापत्य कला का अध्ययन करने का प्रमुख उद्देश्य इस युग की वास्तुकला की विशिष्टताओं को समझना, उनके सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं कलात्मक पक्षों का विश्लेषण करना तथा इन स्थापत्य कृतियों के माध्यम से उस समय की सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक चेतना को उजागर करना है। यह अध्ययन ताजमहल, लाल किला, जामा मस्जिद जैसे स्मारकों के सौंदर्यशास्त्र, निर्माण तकनीक, प्रयुक्त सामग्री एवं शैलीगत विशेषताओं को सामने लाने में सहायक होगा। साथ ही, मुग़ल स्थापत्य पर फ़ारसी, तुर्की और भारतीय प्रभावों के समन्वय को स्पष्ट करना भी इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसके अतिरिक्त, इन स्मारकों के संरक्षण की आवश्यकता, वर्तमान स्थिति और उनके वैश्विक महत्व को रेखांकित करना भी उद्देश्य में शामिल है। यह शोध न केवल इतिहासबोध को समृद्ध करेगा, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध होगा।[2]

मुग़ल वास्तुकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मुग़ल वास्तुकला भारतीय उपमहाद्वीप की वास्तुकला परंपरा में एक अद्वितीय एवं प्रभावशाली अध्याय है, जिसकी शुरुआत 16वीं शताब्दी में बाबर के आगमन से होती है और जो शाहजहां के काल में अपने चरम पर पहुँचती है। इस शैली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम मध्य एशिया, फ़ारस, तुर्की और भारतीय स्थापत्य परंपराओं के योगदान को एक संयुक्त दृष्टिकोण से देखें। बाबर स्वयं समरकंद और हेरात की स्थापत्य शैली से प्रभावित था, जिसने भारत में प्रथम मुग़ल स्थापत्य की नींव डाली, यद्यपि उसके काल में प्रमुख निर्माण कार्य सीमित थे। हुमायूँ ने फ़ारसी प्रभावों को स्थापत्य में समाहित किया, लेकिन वास्तुकला की स्पष्ट पहचान अकबर के काल से प्रारंभ होती है। अकबर ने स्थानीय राजपूत शैली और इस्लामी वास्तुशिल्प का समन्वय कर एक नई मिश्रित शैली विकसित की, जिसे फतेहपुर सीकरी और आगरा किले जैसे स्मारकों में देखा जा सकता है। [3] जहाँगीर ने स्थापत्य में बारीकियों और बाग़वानी को महत्व दिया, जिससे उद्यान-स्थापत्य को

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024
UGC CARE I

प्रोत्साहन मिला। इन सभी शासकों की स्थापत्य नीतियाँ एक क्रमिक विकास की प्रक्रिया थीं, जो विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और क्षेत्रों के मध्य स्थापत्य संवाद का परिणाम थीं। मुग़ल वास्तुकला का मूल आधार इस्लामी स्थापत्य था, जिसमें गुम्बद, मेहराब, मीनार, जालियाँ और कलात्मक शिलालेख प्रमुख थे, परंतु भारतीय विशेषताओं जैसे छतरियाँ, झरोखे, कमलाकार गुम्बद और रंगीन पच्चीकारी ने इसे अधिक जीवंत और बहुरंगी बना दिया। इसके अतिरिक्त निर्माण में ईंट, बलुआ पत्थर और बाद में सफेद संगमरमर का विशिष्ट प्रयोग भी इसकी पहचान बन गया। स्थापत्य केवल धार्मिक या राजनैतिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं था, बल्कि वह मुग़ल शासकों की शक्ति, सांस्कृतिक दृष्टिकोण और सौंदर्यबोध का सजीव दस्तावेज भी था। इस प्रकार मुग़ल वास्तुकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एक बहुस्तरीय विकास यात्रा है, जिसमें स्थानीय और विदेशी तत्वों का संतुलित समावेश हुआ और जिसने भारतीय स्थापत्य की दिशा और धारा को युगों तक प्रभावित किया।[4]

शाहजहां के शासन काल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थिति

शाहजहां का शासनकाल (1628–1658 ई.) मुग़ल साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण और वैभवशाली युग था, जो न केवल राजनीतिक दृष्टि से स्थिरता का प्रतीक बना, बल्कि सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से भी इसे 'मुग़ल स्थापत्य का स्वर्णयुग' कहा जाता है। अकबर और जहाँगीर के द्वारा स्थापित राजनीतिक संरचना और सांस्कृतिक समन्वय की नींव पर शाहजहां ने एक सुदृढ़ और केंद्रीकृत शासन की स्थापना की। इस काल में साम्राज्य की सीमाएँ उत्तर-पश्चिम से लेकर दक्कन तक फैली हुई थीं और व्यापार, कृषि, राजस्व व्यवस्था सभी क्षेत्रों में स्थायित्व और समृद्धि देखी गई। इस आर्थिक सम्पन्नता का सीधा प्रभाव सांस्कृतिक विकास पर पड़ा। कला, साहित्य, संगीत, स्थापत्य और पोशाकों में अभूतपूर्व शुद्धता, सौंदर्य और भव्यता दृष्टिगोचर होती है। फारसी भाषा दरबार की राजभाषा बनी रही, और इस काल में फारसी कविता, इतिहास लेखन तथा शिलालेखों का विशेष विकास हुआ। दरबारी जीवन अत्यंत सुसंस्कृत और शिष्टाचारपूर्ण था, जहाँ संगीत, चित्रकला और साहित्यिक गोष्ठियाँ सामान्य गतिविधियों में शामिल थीं। धार्मिक दृष्टि से यद्यपि शाहजहां एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था, तथापि उसने हिंदू राजाओं और प्रजा के साथ कूटनीतिक और राजनीतिक संतुलन बनाए रखा। स्थापत्य के क्षेत्र में इस काल को सर्वाधिक गौरव प्राप्त हुआ, जहाँ ताजमहल, दिल्ली का लाल किला, जामा मस्जिद, आगरा की मोती मस्जिद, लाहौर का शालीमार बाग़ जैसी रचनाओं ने मुग़ल वास्तुकला को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। इन स्मारकों में फारसी, तुर्की, मध्य एशियाई और भारतीय वास्तुशैली का समन्वय दिखता है। इसी युग में जलवायु के अनुकूल उद्यान निर्माण, संगमरमर का व्यापक प्रयोग, बारीक जाली-कला, नक्काशी और सममिति की उत्कृष्टता स्थापत्य की विशेष पहचान बनी। शाहजहांकालीन भारत एक ऐसा सांस्कृतिक संगम था जहाँ शासक की व्यक्तिगत रुचि, आर्थिक समृद्धि, धार्मिक प्रभाव और कलात्मक चेतना ने मिलकर एक ऐसा वातावरण निर्मित किया, जिसने भारतीय इतिहास को उसकी कलात्मक विरासत की दृष्टि से अमरता प्रदान की।[5]

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024
UGC CARE I

शाहजहां का व्यक्तित्व एवं सौंदर्य दृष्टि

शाहजहां का व्यक्तित्व मुग़ल इतिहास में एक अत्यंत कलासंवेदनशील, भव्यताप्रिय और सौंदर्यबोध सम्पन्न सम्राट के रूप में जाना जाता है, जिसने न केवल प्रशासनिक दक्षता प्रदर्शित की बल्कि कला और स्थापत्य के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी। उसका असली नाम खुर्रम था और वह सम्राट जहाँगीर तथा राजपूत रानी जगत गोसाईं का पुत्र था, जिससे उसे इस्लामी और हिंदू संस्कारों का समन्वित वातावरण प्राप्त हुआ। यह मिश्रित सांस्कृतिक परिवेश उसके सौंदर्यबोध को गहराई प्रदान करता है। शाहजहां बचपन से ही चित्रकला, वास्तुकला और संगीत के प्रति रुचिशील था, और उसके इस कलाप्रेम को और गति मिली जब वह युवराज के रूप में विभिन्न राजप्रासादों, बाग़-बग़ीचों और मस्जिदों की रूपरेखा में योगदान देने लगा। सम्राट बनने के पश्चात उसने कला और स्थापत्य को केवल शाही वैभव के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि संस्कृति और आध्यात्मिकता की भाषा के रूप में देखा। उसकी स्थापत्य शैली में जो सौंदर्य दृष्टि प्रकट होती है, वह संतुलन, सममिति, सादगी और भव्यता का अनूठा संगम है। शाहजहां की कला-संवेदनशीलता का सर्वोत्तम उदाहरण ताजमहल है, जो न केवल प्रेम की अमर निशानी है, बल्कि स्थापत्य सौंदर्य का वैश्विक प्रतीक भी बन चुका है। इसके अतिरिक्त लाल क़िला (दिल्ली), जामा मस्जिद, मोती मस्जिद (आगरा), दीवाने-आम और दीवाने-ख़ास जैसी संरचनाएँ उसके स्थापत्य कौशल और सौंदर्यबोध का प्रमाण हैं। इन इमारतों में संगमरमर का सुरुचिपूर्ण उपयोग, नफीस जालियाँ, फारसी अभिलेख, पच्चीकारी, चारबाग़ शैली और सममिति का अद्वितीय समावेश देखने को मिलता है। शाहजहां के स्थापत्य में उसका धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण भी झलकता है।[6] एक ओर वह एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था, जिसने इस्लामी स्थापत्य परंपराओं का समुचित पालन किया, वहीं दूसरी ओर उसकी संरचनाओं में हिंदू वास्तुशिल्प तत्वों जैसे छतरियाँ, झरोखे, घंटियों की आकृति, कमल की पंखुड़ियाँ आदि का भी सुंदर समावेश हुआ, जो उसकी धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय की भावना को दर्शाता है। उसका स्थापत्य दृष्टिकोण अत्यंत परिष्कृत और गूढ़ था; वह हर इमारत को एक संदेशवाहक के रूप में देखता था—प्रेम, शक्ति, आध्यात्मिकता और संस्कृति का प्रतीक। उसका दरबार, महल और बाग़ केवल राजसी विलासिता नहीं थे, बल्कि मुग़ल संस्कृति की समृद्धि और सौंदर्यशास्त्र की जीवंत प्रतिमाएँ थीं। उसने निर्माण कार्यों के लिए श्रेष्ठ कारीगरों, स्थापत्यविदों और फ़ारसी-तुर्की विशेषज्ञों को आमंत्रित किया और उनके सहयोग से स्थापत्य को एक दिव्य एवं परिष्कृत रूप प्रदान किया। इस प्रकार, शाहजहां का व्यक्तित्व न केवल एक सम्राट का था, बल्कि वह एक कलाश्रेष्ठ दृष्टा भी था, जिसने स्थापत्य को आत्मा की भाषा बना दिया और भारतीय इतिहास को स्थापत्य के क्षेत्र में एक अमूल्य धरोहर प्रदान की, जो आज भी विश्वभर में भारतीय संस्कृति की गरिमा को उजागर करती है।[7]

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024

शाहजहांकालीन स्थापत्य का राजनीतिक सन्दर्भ

- **साम्राज्य विस्तार और सत्ता प्रदर्शन के रूप में स्थापत्य**

शाहजहांकालीन स्थापत्य कला न केवल सौंदर्य और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी, बल्कि इसका एक गहरा राजनीतिक पक्ष भी था। इस काल में स्थापत्य को शक्ति, वैधता और साम्राज्य गौरव के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया। शाहजहां, एक शक्तिशाली और आत्मविश्वासी सम्राट होने के साथ-साथ अपने साम्राज्य के वैभव को स्थापत्य के माध्यम से स्थायित्व देने में विश्वास रखता था। जब मुग़ल साम्राज्य अपने भौगोलिक विस्तार की पराकाष्ठा पर था, तब सम्राट ने इस विस्तार और केंद्रीय सत्ता की शक्ति को जनता और दरबारियों के समक्ष प्रदर्शित करने के लिए स्थापत्य को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया। दिल्ली के लाल क़िले का निर्माण केवल एक दुर्ग नहीं था, बल्कि वह एक शक्तिशाली मुग़ल सत्ता के स्थायी प्रतीक के रूप में निर्मित हुआ, जहाँ से सम्राट की दिव्य उपस्थिति और अभेद्य सत्ता का सन्देश सम्पूर्ण साम्राज्य में प्रसारित होता था। इसी प्रकार आगरा और दिल्ली के दरबारों में निर्मित दीवाने-आम और दीवाने-ख़ास भी सम्राट के प्रताप और न्याय की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति थे, जो जनसंपर्क और प्रशासन का केंद्र बने।

- **राजकीय इमारतों और स्मारकों की राजनीति**

शाहजहां द्वारा निर्मित स्मारकों में राजकीय राजनीति की गूंज स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती है। ताजमहल, यद्यपि व्यक्तिगत शोक और प्रेम की अभिव्यक्ति है, परन्तु साथ ही यह भी एक सशक्त संदेश था कि मुग़ल सम्राट की संवेदनशीलता, आध्यात्मिकता और स्थापत्य पर अधिकार कितना व्यापक और विकसित था। इस स्मारक ने मुग़ल साम्राज्य की संस्कृति को वैश्विक मंच पर स्थापित किया। इसी प्रकार जामा मस्जिद जैसी विशाल धार्मिक इमारतें जनता के बीच शाही धर्मनिष्ठा को सुदृढ़ करने का माध्यम बनीं, जिससे शासक की धार्मिक वैधता को समर्थन प्राप्त होता रहा। राजमार्गों, बाग़ों, सरायों, पुलों और उद्यानों का निर्माण भी केवल लोकहित तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भी दिखाता था कि सम्राट अपने प्रजा के हित में जागरूक है—यह शासकीय छवि को सुदृढ़ करने का एक नियोजित राजनीतिक प्रयास था।

- **स्थापत्य द्वारा वैधता और गौरव की स्थापना**

शाहजहां ने स्थापत्य के माध्यम से अपने शासन को ईश्वरीय वैधता दिलाने का प्रयास भी किया। स्थापत्य उसकी दिव्य उपस्थिति, न्यायप्रियता और सांस्कृतिक श्रेष्ठता का प्रतीक बन गया। दीवाने-ख़ास में जड़ा प्रसिद्ध अभिलेख — *"अगर धरती पर कहीं जन्नत है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है"* — केवल एक काव्यात्मक पंक्ति नहीं, बल्कि एक शासकीय घोषणापत्र था, जो दर्शाता था कि मुग़ल सम्राट के अधीन यह संसार स्वर्ग से कम नहीं है। स्थापत्य के माध्यम से उसने अपने वंश की गौरवगाथा को अमरता प्रदान की, और अपने पूर्वजों से प्राप्त विरासत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। इन इमारतों के द्वारा एक सम्राट ने स्वयं को केवल शासक नहीं, बल्कि संस्कृति, धर्म

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024

और सौंदर्य का संरक्षक सिद्ध किया। इस प्रकार, शाहजहांकालीन स्थापत्य कला ने सत्ता की वैधता, शाही गौरव और स्थायित्व को स्थूल और सूक्ष्म दोनों रूपों में स्थापित किया, जो मुग़ल राजनीति का एक अभिन्न अंग बन गई।[8]

साहित्य, चित्रकला और स्थापत्य का संबंध

- **स्थापत्य में समकालीन चित्रण और अभिलेख**

शाहजहांकालीन स्थापत्य केवल ईंट, पत्थर और संगमरमर का जोड़ नहीं था, बल्कि यह अपने युग के साहित्य, चित्रकला और सांस्कृतिक प्रवाह से गहराई से जुड़ा हुआ था। स्थापत्य में समकालीन चित्रण और अभिलेखों की उपस्थिति न केवल सौंदर्यात्मक उद्देश्य से की गई थी, बल्कि वह उस समय की धार्मिक आस्थाओं, राजनीतिक घोषणाओं और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का महत्वपूर्ण माध्यम भी था। ताजमहल, लाल किला, जामा मस्जिद आदि संरचनाओं में कुरान की आयतें अत्यंत सुंदर नास्तालिक लिपि में संगमरमर पर उकेरी गई हैं, जो स्थापत्य को धार्मिक और साहित्यिक गौरव प्रदान करती हैं। दीवारों पर किए गए शिलालेख केवल धार्मिक संदेश नहीं थे, बल्कि उनमें शासक की उदारता, न्यायप्रियता और आध्यात्मिक चेतना का भी बोध कराया गया। कुछ इमारतों में उस युग के प्रसिद्ध कवियों और लेखकों द्वारा रचित फारसी कविताएँ और दोहे भी उत्कीर्ण किए गए, जिससे स्पष्ट होता है कि स्थापत्य उस काल की साहित्यिक चेतना का भी संवाहक था।

- **फारसी साहित्य में स्थापत्य का उल्लेख**

शाहजहांकालीन दरबार में फारसी भाषा साहित्य, प्रशासन और संस्कृति का मुख्य आधार थी। उस युग के इतिहासकारों, कवियों और शिल्प-प्रशंसकों ने स्थापत्य का जीवंत वर्णन अपनी कृतियों में किया। अब्दुल हमीद लाहौरी द्वारा रचित *"बादशाहनामा"* और अमानत खान द्वारा लिखित शिलालेख इस बात के प्रमाण हैं कि साहित्य और स्थापत्य का गहरा संबंध था। ताजमहल जैसे स्थापत्य स्मारकों का विस्तार से वर्णन फारसी ग्रंथों में मिलता है, जिसमें केवल उसकी भव्यता नहीं, बल्कि उसमें निहित प्रतीकात्मकता, निर्माण प्रक्रिया, स्थापत्य की योजना और भावनात्मक पृष्ठभूमि का भी उल्लेख मिलता है। फारसी साहित्य में स्थापत्य की प्रशंसा मात्र राजभक्ति नहीं थी, बल्कि यह उस युग के बौद्धिक विमर्श का अंग भी था। इन ग्रंथों में स्थापत्य को ईश्वरीय सौंदर्य का प्रतिबिंब माना गया, जिससे सम्राट की छवि एक 'दैवी प्रतिनिधि' के रूप में स्थापित होती थी। [9]

- **चित्रकला और वास्तुकला का पारस्परिक प्रभाव**

शाहजहां काल में चित्रकला और स्थापत्य के बीच गहरा पारस्परिक प्रभाव देखा जाता है। चित्रकला ने स्थापत्य को नई दृष्टि और सौंदर्यबोध प्रदान किया, वहीं स्थापत्य ने चित्रकारों को विषय, पृष्ठभूमि और प्रेरणा दी। राजमहलों और दरबारों की दीवारों पर की गई चित्रकारी, फूल-पत्तियों की सजावट, रंगीन पच्चीकारी और जाली कार्य इस सामंजस्य का जीवंत उदाहरण हैं। ताजमहल और दीवाने-ख़ास जैसे भवनों की दीवारों पर फूलों की जो

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024
UGC CARE I

चित्रात्मक सजावट है, वह फारसी और मुग़ल लघुचित्र परंपरा से प्रेरित है। वहीं दूसरी ओर, समकालीन लघुचित्रों में इन स्थापत्य संरचनाओं को पृष्ठभूमि में दर्शाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि चित्रकला और वास्तुकला केवल दो पृथक कलाएँ नहीं थीं, बल्कि वे एक-दूसरे की पूरक थीं। मुग़ल चित्रों में महलों, बाग़ों और मस्जिदों का इतना सटीक और सुंदर अंकन किया गया है कि वे स्थापत्य इतिहास के अमूल्य दस्तावेज बन गए हैं। इस प्रकार, शाहजहां काल में साहित्य, चित्रकला और स्थापत्य ने परस्पर एक-दूसरे को समृद्ध करते हुए उस युग की बहुआयामी सांस्कृतिक चेतना को साकार रूप प्रदान किया। यह संबंध केवल कला तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सत्ता, धर्म और समाज के व्यापक परिप्रेक्ष्य को प्रतिबिंबित करता था, जिससे शाहजहांकालीन स्थापत्य एक संपूर्ण सांस्कृतिक अभिव्यक्ति बन कर उभरा।[10]

शाहजहांकालीन स्थापत्य का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

जनसामान्य और दरबारी वर्ग पर स्थापत्य का प्रभाव

शाहजहांकालीन स्थापत्य ने न केवल राजकीय वैभव और सौंदर्य का प्रदर्शन किया, बल्कि इसका गहरा प्रभाव समकालीन समाज और संस्कृति पर भी पड़ा। इन भव्य इमारतों ने आम जनता और दरबारी वर्ग दोनों की सोच, जीवनशैली और सांस्कृतिक व्यवहार को प्रभावित किया। दरबारी वर्ग के लिए महलों, दीवानों और किलों की स्थापत्य योजना ने शिष्टाचार, दरबारी परंपराओं और शासकीय आयोजन की रीति-नीति को एक नया रूप दिया। दीवाने-आम और दीवाने-ख़ास जैसे प्रांगण, जहाँ सम्राट न्याय करता था या विदेशियों का स्वागत होता था, एक सामाजिक मंच बन गए थे, जहाँ सत्ता और संस्कृति एक साथ प्रस्तुत होती थीं। वहीं जनसामान्य के लिए मस्जिदें, बाग़-बग़ीचे, सरायें और पुल जैसे स्थापत्य निर्माण सार्वजनिक जीवन की सुविधा और गौरव का हिस्सा बने। इन संरचनाओं में आम जनता को भी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिलता, जिससे समाज में एक प्रकार का सामूहिक सांस्कृतिक बोध विकसित हुआ।[11]

धार्मिक सहिष्णुता एवं सांस्कृतिक समन्वय के प्रतीक

शाहजहां के स्थापत्य में धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यद्यपि वह एक सुन्नी मुस्लिम सम्राट था, परंतु उसने अपने स्थापत्य में केवल इस्लामी प्रतीकों तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि हिंदू, राजपूत, तुर्क और फ़ारसी वास्तुशैली के तत्वों को सम्मिलित कर एक समन्वयात्मक शैली विकसित की। उदाहरण के लिए, ताजमहल की जालीदार खिड़कियाँ, छतरियाँ, घंटाकार गुम्बद, कमल पुष्प की आकृति और झरोखे जैसी विशेषताएँ भारतीय शिल्प परंपरा की देन हैं, जो यह दर्शाती हैं कि यह स्थापत्य केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समरसता का प्रतीक था। इसी प्रकार जामा मस्जिद जैसी संरचनाएँ एक ओर इस्लामी वास्तुकला की उत्कृष्टता को दर्शाती हैं, तो दूसरी ओर इनकी भव्यता और स्थानिक योजना सामाजिक समरसता की भावना को पुष्ट करती है। शाहजहां के समय निर्मित अनेक उद्यान, जलाशय और धर्मार्थ भवनों में विभिन्न

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024
UGC CARE I

समुदायों के लोग एक साथ समय बिताते थे, जिससे धार्मिक और सांस्कृतिक सहअस्तित्व की भावना बलवती होती थी। [12]

उत्सव, आयोजन और सार्वजनिक स्थानों की भूमिका

शाहजहांकालीन स्थापत्य ने सामाजिक आयोजनों और उत्सवों के लिए भी अनुकूल स्थान प्रदान किए। राजकीय उत्सव, शाही दरबार, ईद, बकरीद, होली जैसे आयोजन, दरबार-ए-आम और खुले मैदानों में आयोजित किए जाते थे, जो कि वास्तुशिल्पीय दृष्टि से विशेष रूप से ऐसे आयोजनों के लिए ही निर्मित किए गए थे। दिल्ली के लाल क़िले का 'नक्कारख़ाना' और 'रंग महल' न केवल संगीत और नाट्य प्रस्तुतियों के मंच थे, बल्कि ये दरबार के सांस्कृतिक आयोजन के केंद्र भी बने। बाग़ों की चारबाग़ योजना न केवल सौंदर्यपूर्ण थी, बल्कि ये शांति और सार्वजनिक संवाद के स्थान भी थे, जहाँ कवि-सम्मेलन, गोष्ठियाँ और संगीत-प्रस्तुतियाँ होती थीं। [13]. मस्जिदों और धर्मस्थलों के आंगन में धार्मिक आयोजन और सामाजिक मेलजोल होता था। इस प्रकार, शाहजहां काल का स्थापत्य सामाजिक जीवन को एक रूप, एक वातावरण और एक अनुशासन प्रदान करता था, जहाँ वास्तु और संस्कृति ने मिलकर एक जीवंत सामाजिक संरचना को पोषित किया। इस स्थापत्य के माध्यम से सम्राट ने एक ऐसा सामाजिक संदेश दिया, जो धर्म, संस्कृति और समाज के बीच सेतु का कार्य करता रहा, और आज भी ये संरचनाएँ उसी भावना की सजीव अभिव्यक्ति बनी हुई हैं।[14]

निष्कर्ष

शाहजहां कालीन स्थापत्य कला मुग़ल स्थापत्य परंपरा की सर्वोच्च उपलब्धि है, जो सौंदर्य, समरसता, तकनीकी कौशल और सांस्कृतिक समन्वय का जीवंत प्रतीक बनकर उभरी। इस युग में स्थापत्य न केवल शासकीय वैभव का प्रदर्शन रहा, बल्कि उसे धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना से भी जोड़ा गया। सफेद संगमरमर का व्यापक और कलात्मक प्रयोग, जटिल नक्काशी, सममिति और अनुपात की सूक्ष्म योजना, फारसी और भारतीय तत्वों का समन्वय, साथ ही स्थापत्य में प्रयुक्त शिलालेख, जालियाँ, पच्चीकारी और बाग़वानी शैली—इन सबने मिलकर इस काल को स्थापत्य के क्षेत्र में स्वर्णयुग बना दिया। ताजमहल, लाल क़िला, जामा मस्जिद, मोती मस्जिद और अन्य संरचनाएँ न केवल भौतिक निर्माण हैं, बल्कि एक युग की संवेदनाओं, आस्थाओं और कलात्मक दृष्टि का दर्पण भी हैं। शाहजहां की कला-संवेदनशीलता, सौंदर्य के प्रति उसका झुकाव, धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय की भावना ने स्थापत्य को साधारण निर्माण कार्य से ऊपर उठाकर एक जीवंत सांस्कृतिक संवाद बना दिया। इन स्मारकों ने जनता और दरबारियों दोनों पर गहरा प्रभाव डाला, सामाजिक आयोजनों, धार्मिक जीवन और सार्वजनिक संस्कृति को एक स्थायित्व और वैभव प्रदान किया। स्थापत्य को सत्ता की वैधता, ईश्वरीय निकटता और शाही गौरव के प्रतीक के रूप में भी गढ़ा गया, जिससे यह राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया। चित्रकला और साहित्य के साथ स्थापत्य का समन्वय इसे बहुआयामी सांस्कृतिक कृति में परिवर्तित करता है। इस प्रकार, शाहजहां कालीन स्थापत्य न केवल स्थापत्य विज्ञान का उत्कर्ष है, बल्कि

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024

UGC CARE I

यह एक समृद्ध सभ्यता, सजीव संस्कृति और सौंदर्यप्रिय शासक की दृष्टि का अमर साक्ष्य है। यह स्थापत्य आज भी न केवल भारतीय उपमहाद्वीप की गौरवमयी विरासत का हिस्सा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति की गरिमा का प्रतीक बनकर मानवता के सामने एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

1. लांबा, ए. जी. (2008)। *दिल्ली : अ लिविंग हेरिटेज*। नई दिल्ली: इंटैक (INTACH) एवं अर्बन हेरिटेज फाउंडेशन।
2. हसन, एस. (2001)। *सुल्तान्स एंड मॉस्क्स: द अर्ली मुस्लिम आर्किटेक्चर ऑफ बांग्लादेश*। लंदन: आई. बी. टॉरिस। *(इस ग्रंथ में शाहजहानी शैली से संबंधित तुलनात्मक इस्लामी स्थापत्य तत्व समाहित हैं।)*
3. हैदर, एन. (2015)। *मुग़ल दरबार की संस्कृति में सुगंध और प्रतीकात्मकता*। *मुग़ल ऑक्सिडेंटलिज्म: यूरोप और एशिया के बीच कलात्मक संवाद* (पृ. 85–104)। लीडेन: ब्रिल प्रकाशन।
4. नाथ, आर. (2001)। *दिल्ली के स्मारक: स्थापत्य और ऐतिहासिक*। जयपुर: पब्लिकेशन स्कीम।
5. ख़ान, जी. (2022)। *शाहजहानी स्थापत्य: सम्राट शाहजहां की कला एवं स्थापत्य संरक्षण में भूमिका*। *फ़ेस्टशिफ्ट इन ऑनर ऑफ एम. इकराम चघताई* (पृ. 136–154)।
6. मोइनिहान, ई. बी. (2000)। *द मूनलाइट गार्डन: न्यू डिस्कवरीज़ एट द ताज महल*। वॉशिंगटन डी.सी.: स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन प्रेस।
7. चंद्रा, एस. (2007)। *मध्यकालीन भारत: सुल्तनत से मुग़लों तक (खंड द्वितीय)*। नई दिल्ली: हर-आनंद पब्लिकेशंस।
8. रिज़वी, एस. ए. ए. (2005)। *द वंडर दैट वाज़ इंडिया: खंड द्वितीय*। लंदन: पिकाडोर।
9. गैस्कोइन, बी. (2002)। *द ग्रेट मुग़ल्स एंड देअर इंडिया*। लंदन: हार्पर कॉलिन्स।
10. टिलॉटसन, जी. (2008)। *मुग़ल इंडिया: कला, संस्कृति और साम्राज्य*। लंदन: पेंगुइन यू.के.।
11. शोकूही, एम. (2003)। *दक्षिण भारत की मुस्लिम स्थापत्य कला: माबार सल्तनत और समुद्रतटीय बसावटों की परंपराएँ* (तमिलनाडु, केरल और श्रीलंका)। लंदन: रूटलेजकर्ज़न।
12. इंटैक (INTACH)। (2015)। *भारत की मुग़ल उद्यान धरोहर पर संरक्षण रिपोर्ट*। नई दिल्ली: इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 14, Issue 3 – Sep 2024

UGC CARE I

13. हैदर, एन. (2023)। *शाहजहां के स्थापत्य की शहरी दृष्टि और सौंदर्यबोध : दिल्ली और आगरा की विरासत*। *जर्नल ऑफ साउथ एशियन आर्ट एंड आर्किटेक्चर*, 17(1), पृ. 45–68।

14. अली, एस. आर. (2021)। *शाहजहानी स्मारकों में कुरानिक अभिलेख: धार्मिक भक्ति और राजनीतिक अधिकार का दृश्य रूप*। *साउथ एशियन स्टडीज़ जर्नल*, 39(3), पृ.211–230।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved